प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 20 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नई परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख–शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग–अलग बातें हैं। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है।

कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियाँ ही ऐसी हैं। परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि वे तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है, कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा भी गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

1. मनुष्य के मानसिक रोग और अशांति का कारण किसे माना गया है? 2

   उत्तर : मनुष्य के मानसिक रोग और अशांति का प्रमुख कारण मनुष्य की अंतहीन इच्छाएँ एवं सच्ची सफलता और सुख–शांति की प्यास है।

2. सफलता पाना और सफल जीवन जीना दोनों बातें अलग कैसे हैं? 2

   उत्तर : सफलता पाना और सफल जीवन जीना दोनों ही अलग है। क्योंकि अभीष्ट फल को प्राप्त कर लेना सफलता है जबकि जीवन में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का पालन करके सतत आगे बढ़ना सफल जीवन जीना है।

3. गद्यांश में जीवन का सौंदर्य और संघर्ष किसे बताया गया है? क्यों? 2

   उत्तर : गद्यांश में जीवन का सौंदर्य हैं विफलताएँ तथा जीवन के काव्य को संघर्ष कहा गया है। क्योंकि संघर्ष और विफलताएँ दोनों ही जीवन की बाधाओं को दूर कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

4 पत्थर का उदाहरण क्यों दिया गया है? 2

   उत्तर : पत्थर सम–विषम सभी परिस्थितियों से संघर्ष कर बार–बार स्वयं को बचाने का प्रयास करता है। उसके इसी जीवन का वर्णन कर लेखक ने मनुष्य को कठिनाइयों व विपरीत परिस्थितियों का बार–बार सामना करने को प्रेरित करने के लिए प्रेरणादायी स्रोत के रूप में सटीक उदाहरण दिया है।

5. आशय स्पष्ट कीजिए– ''संघर्ष जीवन का काव्य है।'' 1

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति का आशय यह है कि जीवन का वास्तविक आनंद एवं रस संघर्ष में ही है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : जीवन एक संघर्ष।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. अक्षय प्रतिदिन पढ़ता है और उसका भाई खेलता है। (वाक्य का प्रकार बताइए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य।

2. वह घर जाते ही काम में लग गया। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : वह घर गया ताकि काम में लग जाए।

3. जब तुम मुझसे मिले थे, तब मैं मोटा था। (रेखांकित उपवाक्य का भेद बताइए)

उत्तर : क्रियाविशेषण उपवाक्य।

4. यदि वह आए, तुम छिप जाना। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : उसके आने पर तुम छिप जाना।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. इतनी गर्मी में कैसे बैठा जाए। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : इतनी गर्मी में बैठा नहीं जाता।

2. नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्याग दिया गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : नेता जी ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया।

3. कर्मवाच्य का एक वाक्य लिखिए। (वाच्य का भेद बताइए)

उत्तर : क्या आप द्वारा दिल्ली जाया जाएगा।

4. मुझसे पत्र लिखा जाएगा। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : मैंने पत्र लिखा।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद–परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. मुझे कल गाँव जाना है।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन।

2. राम ने रावण को मारा।

उत्तर : संज्ञा व्यक्तिवाचक पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक।

3. मीरा प्रसिद्ध कवयित्री हैं।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण मूलावस्था, स्त्रीलिंग, एकवचन विशेष्य मीरा।

4. शीत ऋतु में हिमालय बर्फ से ढक जाता है।

उत्तर : विशेषण, गुणवाचक, स्त्रीलिंग, एकवचन।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. अति रस बोले वचन कठोर।
बेगि देखाऊ मूढ़ न आजू।।
पंक्ति में निहित रस का नाम लिखिए।

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति में रौद्र रस निहित है।

2. वीर रस का एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर : मानव समाज में अरूण पड़ा,
जल जंतु बीच हो वरूण पड़ा।
इस तरह भभकता राणा था,
मानों सर्पों में गरूण पड़ा।

3. काव्यांश पढ़कर रस पहचानकर लिखिए–
'जब धूमधाम से जाती है बारात किसी की सज–धज कर
मन करता धक्का दे दूल्हें को, जा बैठूँ घोड़ी पर।।'

उत्तर : हास्य रस।

4. जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से 'रति' स्थायी भाव आस्वाद्य हो जाता है तो उसे कौनसा रस कहते हैं?

उत्तर : श्रृंगार रस।

5. वात्सल्य रस का अनुभाव लिखिए।

उत्तर : बच्चे के प्रति माँ की प्रतिक्रिया।

खण्ड–ग 34

(पाठ्य–पुस्तक एवं पूरक पाठ्य–पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

''भारत जाने की बात क्यों उठी?''

''नहीं जानता, बस मन में यह था।'' उनकी शर्त मान ली गई और वह भारत आ गए। पहले 'जिसेट संघ' में दो साल पादरियों के बीच धर्माचार की पढ़ाई की। फिर 9–10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। कलकत्ता (कोलकाता) से बी.ए. किया और फिर इलाहाबाद से एम.ए.। उन दिनों डॉ. धीरेंद्र वर्मा हिंदी विभाग के अध्यक्ष थे। शोधप्रबंध प्रयोग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रहकर 1950 में पूरा किया– 'रामकथाः उत्पत्ति और विकास।' 'परिमल' में उसके अध्याय पढ़े गए थे। फादर ने मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का रूपांतर भी किया है। 'नीलपंछी' के नाम से। बाद में यह सेंट जेवियर्स कॉलेज, राँची में हिंदी तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए और यहीं उन्होंने अपना प्रसिद्ध अंग्रेजी–हिंदी कोश तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी ..... और वहीं बीमार पड़े, पटना आए। दिल्ली आए और चले गए–47 वर्ष देश में रहकर और 73 वर्ष की जिंदगी जीकर।

1. गद्यांश से फादर की क्या विशेषता प्रकट होती है? 2

उत्तर : गद्यांश से फादर की शिक्षा से लगाव तथा उनकी कर्मठता जैसी विशेषता प्रकट होती है। अहिंदी भाषी देश से हिंदी भाषी क्षेत्र में आकर उसी में रम जाना उसके उच्च शिवर पर पहुँचना उनकी विद्धता एवं कर्मठता की परिचायक है।

2. फादर की रचनाओं का विवरण दीजिए। 2

उत्तर : फादर ने 'राम कथाः उत्पत्ति और विकास' नाटक 'नीलपंछी' तथा अंग्रेजी–हिंदी कोश जैसी प्रसिद्ध रचनाएँ की।

3. फादर भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग हैं। कैसे? 2

उत्तर : फादर ने भारत आकर दो साल पादरियों से धर्माचार की पढ़ाई की, कलकत्ता से बी.ए. और इलाहाबाद से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। प्रथम विश्वविद्यालय से 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' शीर्षक पर शोध प्रबंध किया। सेंट जेवियर्स कॉलेज राँची में हिंदी व संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहे। प्रसिद्ध हिंदी–अंग्रेजी शब्द–कोश तैयार किया।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. लेखक ने नवाब साहब की असुविधा के कारण का क्या अनुमान लगाया?

उत्तर : लेखक ने यह अनुमान लगाया कि नवाब साहब ने पैसे की बचत करने के उद्देश्य से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया होगा। उस समय उन्होंने यह सोचा होगा कि उस डिब्बे में और कोई यात्री नहीं होगा और वे अकेले यात्रा करेंगे। इस कारण शहर का कोई भी भद्र व्यक्ति उन्हें नहीं देख सकेगा। परंतु लेखक के आ जाने से उन्हें अपनी वास्तविकता के प्रकट हो जाने का भय सताने लगा होगा। इसी कारण नवाब साहब असुविधा और संकोच का अनुभव कर रहे होंगे।

2. बालगोबिन भगत की मृत्यु को गौरवशाली मृत्यु कैसे कहेंगे?

उत्तर : बालगोबिन की मृत्यु को हम गौरवशाली मृत्यु कहेंगे। वह अपनी अंतिम साँस तक प्रभु–भक्ति में लीन रहे। वह नियमित दिनचर्या का पालन करते रहे। अपने जीवन को सत्कर्म में लगाए रहे। न किसी से छल–कपट किया, न किसी से कुछ माँगा। वह गाते–गाते जिए और गाते–गाते मरे। जीवन में सभी को अपना संगीत बाँटकर गए। इसलिए हम इसे गौरवशाली मृत्यु की संज्ञा देंगे।

3. पान वाले का एक रेखाचित्र पाठ नेताजी का चश्मा के आधार पर प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : पानवाले की दुकान कस्बे के मुख्य बाजार के चौराहे पर थी। पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज व्यक्ति था। उसकी बड़ी–सी तोंद थी। वह हमेशा पान चबाता रहता था। इस कारण उसके दाँत लाल–काले हो गए थे। वह एक मजाकिया इंसान था। उसका देश के लिए त्याग करना एक तरह का पागलपन था। वह एक संवेदनशील व्यक्ति भी था। इसीलिए कैप्टन की मृत्यु की बात कहते समय उसकी आँखों से आँसू छलक आए थे।

4. काशी में होने वाले कौन–से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते हैं?

उत्तर : काशी में हो रहे परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे। संगीत, नृत्य, साहित्य और अदब की बहुत–सी परंपराएँ लुप्त हो गईं थीं। वहाँ से मलाई बरफ बेचने वाले भी जा चुके हैं। देशी घी की बनी कचौड़ी, जलेबी भी अब वहाँ नहीं मिलती। खाँ साहब को उसकी कमी खलती है। अब संगतियों के लिए गायकों के मन में कोई आदर नहीं रहा। घंटों रियाज करने वाले संगीत साधकों की अब काशी में कोई कद्र नहीं रही। ये सभी कारण बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते हैं।

5. लेखिका के पिता किस तरह के अंतर्विरोधों के बीच जीते थे?

उत्तर : लेखिका के पिता अत्यंत महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति थे। वे समाज में 'विशिष्ट' बने रहना चाहते थे और अपनी बेटी को भी वैसा ही बनाना चाहते थे। दूसरी ओर वे यह भी चाहते थे कि उनकी बेटी घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर सड़कों पर न तो नारे लगाए और न ही भाषणबाजी करे, जिससे उनकी सामाजिक छवि साफ–सुथरी बनी रहे। जबकि लेखिका के विचार में इस तरह के कार्यकलाप तो उसे विशिष्ट ही बनाते थे। इस प्रकार उसके पिता अंतर्विरोधों के बीच जीते थे।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज में राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढ़ाँढ़स बँधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी–कभी वह यों ही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फिर से गाया जा सकता है
गाया जा चुका राग
और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है
उसे विफलता नहीं
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

1. संगतकार किन विषम परिस्थितियों में मुख्य गायक का साथ देता है? किन्हीं दो स्थितियों का उल्लेख कीजिए। 2

उत्तर : संगतकार उन परिस्थितियों में मुख्य गायक का साथ देता है जब वह अपनी गायन की ऊँचाई पर पहुँचकर बिखरने लगता है तथा उसका उत्साह मंद पड़ने लगता है तथा आवाज से राख जैसा कुछ गिरता हुआ महसूस होता है।

2. तारसप्तक में गाने के कारण कई बार गायक को कैसा अनुभव होता है? 2

उत्तर : तारसप्तक में गाने के कारण कई बार गायक का गला बैठने लगता है, गाने की इच्छा समाप्त होने लगती है, उत्साह मंद होने लगता है और आवाज डूबने लगती है।

3. संगतकार का मंद स्वर में गाना उसकी मनुष्यता कैसे है? 2

उत्तर : संगतकार का मंद स्वर में गाना उसकी मनुष्यता है। अगर संगतकार ऐसा नहीं करे तो बड़े-बड़े गायकों का सुर बिखर जाएगा। संगतकार अपने स्वर को हमेशा मुख्य गायक से नीचे रखने का प्रयास करता है ताकि मुख्य गायक की श्रेष्ठता बरकरार रहे। वह अपना सर्वस्व खोकर मुख्य गायक की श्रेष्ठता बनाए रखता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. अट नहीं रही कविता का सारांश लिखिए।

उत्तर : 'अट नहीं रही है' कविता फागुन मास की मस्ती और शोभा का वर्णन करती है। इसमें कवि ने कहा है कि फागुन मास की शोभा अपने में समा नहीं पा रही है। इसलिए वह बाहर छलक-छलक पड़ती है। कहीं सुगंधित हवाएँ हैं, कहीं बागों एवं घरों में रंग-बिरंगे फूल उगे हैं, कहीं आकाश में पक्षियों की टोलियाँ कलरव करती हुई उड़ान भर रही हैं। कहीं वृक्षों पर नए पत्ते सुशोभित हैं। कहीं सुगंधित फूल खिल रहे हैं। इस प्रकार जगह-जगह सौंदर्य की छवि बिखरी पड़ी है।

2. गोपियों ने किन उदाहरणों द्वारा उद्भव पर व्यंग्य किया है?

उत्तर : गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा उद्धव को उलाहने दिए हैं- वे कहती हैं कि हे उद्धव! हमारी प्रेम भावना हमारे मन में ही रह गई है। हम तो कृष्ण को अपने मन की प्रेम-भावना बताना चाहती थीं किंतु उनका यह योग का संदेश सुनकर तो हम उन्हें कुछ भी नहीं बता सकतीं। हम तो श्रीकृष्ण के लौट आने की आशा में जीवित हैं। हमें उम्मीद है कि श्रीकृष्ण अवश्य ही एक-न-एक दिन लौट आएँगे, किंतु उनका यह संदेश सुनकर हमारी आशा नष्ट हो गई है, और हमारे विरह की आग और भी भड़क उठी। इससे तो अच्छा था कि तू आता ही नहीं। गोपियों को यह भी आशा थी कि श्रीकृष्ण प्रेम की मर्यादा का पालन करेंगे। वे उनके प्रेम के प्रतिदान में प्रेम देंगे। किंतु उन्होंने निर्गुणोपासना का संदेश भेजकर प्रेम की सारी मर्यादा को तोड़ डाला। इस प्रकार वह मर्यादाहीन बन गया है।

3. 'लड़की अभी सयानी नहीं थी' 'कन्यादान' कविता में कवि ने ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर : प्रश्नोक्त पंक्ति के माध्यम से कवि यह दिखाना चाहता है कि लड़की को अपने घर में उसे सुख और प्यार ही मिला है। वह अभी सुख का तो अनुभव कर चुकी है, परंतु दुःखों से अनभिज्ञ है। माँ जानती है कि ससुराल में वह अनेक बंधनों में बँध जाएंगी। वहाँ उसे जीवन के दुःखों का भी सामना करना पड़ेगा। बेटी उन्हें किस प्रकार सहन कर पाएगी, लड़की में अभी दुनियादारी की समझ नहीं है और वह अत्यंत सीधी-सादी है।

4. फसल को सही स्वरूप प्रदान करने में किन-किन तत्वों का महत्व है?

उत्तर : कविता में फसल के उत्पादन में प्रकृति और मनुष्य दोनों का योगदान बताया गया है। कविता में यह कहा गया है कि फसल के तैयार होने में नदियों का पानी, मनुष्य के परिश्रम, भूरी-काली संदली मिट्टी, सूर्य की किरणों और हवा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। इन तत्त्वों के सम्मिलित सहयोग से ही फसल का निर्माण संभव हो पाता है।

5. परशुराम ने लक्ष्मण की शिकायत विश्वामित्र से ही क्यों की?

उत्तर : परशुराम ने पहले लक्ष्मण को व्यंग्यपूर्ण बातें कहने से रोकने का भरपूर प्रयास किया। उन्होंने उन्हें डराने की भी कोशिश की। परंतु लक्ष्मण ने अपना व्यंग्यात्मक प्रहार जारी रखा। इस पर परशुराम ने लक्ष्मण की शिकायत करते हुए विश्वामित्र से उन्हें रोकने के लिए कहा। इसका कारण यह था कि विश्वामित्र परशुराम के क्रोधी स्वभाव से परिचित थे और लक्ष्मण का गुरु होने के कारण वे उन्हें आदेश देकर रोक सकते थे।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. पाठ 'माता का अँचल' में माता-पिता का बच्चे के प्रति व्यक्त वात्सल्य को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : वर्णित अध्याय में माता-पिता का बच्चे के प्रति असीम वात्सल्य व्यक्त हुआ है। बच्चे का पिता के साथ विभिन्न शैतानियाँ करना यथा-मूँछ खींचना, कुश्ती लड़ना, कंधे पर बैठना आदि क्रियाएँ पिता को बच्चे के प्रति वात्सल्य से भर देती हैं। पिता द्वारा बच्चे के गालों पर खट्टा-मीठा चुम्मन लेना, पिता के रोम-रोम को खुशी प्रदान करता है। पिता कभी भी बच्चे के शैतानी भरे खेल-तमाशों से तंग नहीं होते। पिता द्वारा बच्चे की गुस्ताखियों को माफ करना प्यार का ही प्रतीक है। माता द्वारा बच्चे को मुँह भर रोटी के कौर खिलाना और यह कहना 'जब खाएगा बड़े-बड़े कौर, तब पाएगा दुनिया में ठौर' बच्चे के प्रति वात्सल्य, आशीर्वाद तथा शुभ आकांक्षाओं का चिह्न है बच्चे को नहलाना, चोटी-गूँथना, काजल लगाना, रंगीन कुर्ता-धोती पहनाकर कन्हैया का रूप देना माँ द्वारा अपने बच्चे में ही भगवान का रूप देखना है। बच्चे के भयभीत होने पर अपनी गोद में उठाकर उसे पुचकारना, अंगों को अपने अँचल से पोंछकर बच्चे को चूमना आदि में सहज ही माँ के ममत्व के दर्शन होते हैं। माता-पिता के लिए बच्चा ही खुशियों का भंडार है। उसके बिना उनका जीवन नीरस एवं सूना है।

2. 'अतिथि देवो भव' भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर भारत आनेवाले अतिथियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर : जैसे कि प्रश्नोक्त पंक्ति से स्पष्ट है, हमारी भारतीय संस्कृति में अतिथि को देव तुल्य माना गया है। अतः हमें भारत में आने वाले अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत करना चाहिए। उनके साथ हमेशा सहयोग एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए ताकि उन्हें यहाँ आकर घर जैसा माहौल मिले। व्यवहार ही हमारी संस्कृति का दर्पण है। अतः जैसा व्यवहार हम अपने लिए चाहते हैं। ठीक वैसा ही व्यवहार हमें अपने अतिथियों के साथ करना चाहिए। दूसरों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा देने से अपना सम्मान एवं प्रतिष्ठा बढ़ती है, अतः हमें हमेशा अपने अतिथियों की पसंद–नापसंद का ख्याल रखते हुए उन्हें अति सम्मानित व्यक्तियों की तरह सुविधाएँ देनी चाहिए ताकि वे अपने देश लौटकर हमारी संस्कृति का गुणगान करें।

3. घुमक्कड़ी हमें 'स्व' की संकीर्णता से मुक्त करती है, तथा एक–दूसरे से जुड़ना सिखाती है। यह कथन कहाँ तक सत्य है?

उत्तर : प्रश्नोक्त कथन अक्षरशः सत्य है क्योंकि घुमक्कड़ी से हम अनेक लोगों के संपर्क में आते हैं और अपनी संस्कृति का आदान–प्रदान करते हैं। हमेशा नया सीखने को मिलता है तथा ज्ञान में बढ़ोतरी होती है। घुमक्कड़ी से आपसी प्रेम बढ़ता है, सामंजस्य तथा समन्वय की भावना का विकास होता है तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना आती है। अगर घुमक्कड़ी नहीं होती तो हम कूप मंडूक की तरह एक ही जगह पर जीवन गुजार रहे होते और उसी को सब कुछ समझते। हमें किसी भी दूसरी संस्कृतियों की जानकारी नहीं होती और हम आज भी अपनी प्राचीन संस्कृतियों के बंधन में बँधकर वनवासी का जीवन गुजार रहे होते।

खण्ड–घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए– 10

(1) सिनेमा का समाज पर प्रभाव

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ आधुनिक समय में सिनेमा की भूमिका ✲ सिनेमा एवं व्यवसाय के मध्य संबंध ✲ उपसंहार

(2) अनेकता में एकता–हिंद की विशेषता

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ विभिन्न स्तरों पर एकता ✲ एकता के विभिन्न रूप ✲ उपसंहार

(3) मीडिया का वर्चस्व

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ मीडिया की उपयोगिता ✲ मीडिया के प्रशंसनीय कार्य ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) सिनेमा का समाज पर प्रभाव

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ आधुनिक समय में सिनेमा की भूमिका ✲ सिनेमा एवं व्यवसाय के मध्य संबंध ✲ उपसंहार

भूमिका– सिनेमा आधुनिक युग में विज्ञान का मुख्य आविष्कार है। सिनेमा जनसंचार एवं मनोरंजन का एक लोकप्रिय माध्यम है। समाज के प्रत्येक आयु वर्ग में इसके प्रति उत्सुकता रहती है। विज्ञान के इस महत्वपूर्ण आविष्कार की पहुँच आज घर–घर में है। कम खर्च में मनोरंजन करने में समर्थ चलचित्र जीवन की आवश्यकता बन गया है।

आधुनिक समय में सिनेमा की भूमिका– हालाँकि पिछले कुछ दशकों से भारतीय समाज में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई है। इसका प्रभाव इस समय निर्मित सिनेमा पर भी दिखाई पड़ा है। फिल्म–निर्माण को तकनीकी दृष्टिकोण से देखा जाए, तो हिंसा एवं सेक्स को अन्य रूप में भी कहानी का हिस्सा बनाया जा सकता है, किंतु युवा वर्ग को आकर्षित कर धन कमाने के उद्देश्य से जानबूझकर सिनेमा में इस प्रकार के चित्रांकन पर बल दिया जाता है।

इसका कुप्रभाव समाज पर भी पड़ता है। प्रायः फिल्मों में यही दिखाया जाता है कि बुरा करने वाले व्यक्ति का अंत में बुरा ही होता है एवं अच्छाई की जीत होती है। इसके पश्चात् भी व्यक्ति बुरा ही सीखता है, तो इसके लिए सिनेमा को दोष देना ठीक नहीं है। कुछ लोग समाज में बढ़ी हिंसा, विकृत फैशन एवं अपराध के लिए सिनेमा को दोष देते हैं, किंतु सिनेमा पर यह आरोप लगाने से पहले वे यह भूल जाते हैं कि सिनेमा की कहानी भले ही काल्पनिक रही हों, किंतु इसमें वही सब दिखाया जाता है, जो समाज में हो रहा है।

सिनेमा एवं व्यवसाय के मध्य संबंध– सिनेमा के माध्यम से समाज को ज्ञान, मनोरंजन जैसे साधन प्राप्त हुए, वहीं बोलने वाले सिनेमा ने अच्छे नायकों, शास्त्रीय संगीत वादकों को अपनी ओर आकृष्ट किया। इसके फलस्वरूप सुप्रसिद्ध गायक और वादक सिनेमा में कार्य करने लगे और सिनेमा की प्रतिष्ठा बढ़ने लगी। लोगों को अपने कला–कौशलों को दिखाने का अवसर मिला।

वर्तमान समय में सिनेमा की सहायता से कृषि, शिक्षा, नवीन उद्योगों आदि की जानकारी देना सरल सिद्ध हुआ है। इसके लिए नई–नई तकनीकी के आधिक्य के कारण भी व्यवसाय की गति तीव्र हुई। सिनेमा की लोकप्रियता बढ़ने से मानव समाज की व्यावसायिक क्षेत्र में उन्नति होने लगी।

उपसंहार– भारत की फिल्मों के बारे में यह भी कहा जाता है कि ये फिल्में प्रायः प्रेम–कहानियों पर आधारित होती हैं। यह सही है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में आधुनिक भारतीय–फिल्मकारों ने नो वन किल्ड जेसिका, पीपली लाइव, आर्टिकल 15 जैसी अनेक सार्थक फिल्मों का भी निर्माण किया है। ऐसी फिल्मों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है एवं लोग सिनेमा से शिक्षा ग्रहण कर समाज सुधार के लिए कटिबद्ध होते हैं।

(2) अनेकता में एकता–हिंद की विशेषता

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ विभिन्न स्तरों पर एकता ✲ एकता के विभिन्न रूप ✲ उपसंहार

भूमिका– हिंद अर्थात् भातरवर्ष के संदर्भ में निम्न पंक्तियाँ पूर्णतः उपयुक्त प्रतीत होती हैं–

''हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं
रंग, रूप, भेष, भाषा चाहे अनेक हैं।''

अनेकता में एकता भारत की अन्यतम विशेषता है। यहाँ हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी आदि विविध धर्मों को मानने वाले लोग निवास करते हैं। इनकी भाषा, रहन–सहन, रीति–रिवाज, आचार–विचार, व्यवहार, धर्म आदि भिन्न–भिन्न हैं। इसके पश्चात् भी भारत के लोगों की एकता देखते ही बनती हैं। इस एकता के पीछे अनेक महत्त्वपूर्ण कारण हैं।

विभिन्न स्तरों पर एकता– गहराई से देखने पर पता चलता है कि भारत में विद्यमान विभिन्न धर्म, धार्मिक संप्रदाय एवं मत समान दार्शनिक एवं नैतिक सिद्धांतों पर आधारित हैं। एकेश्वरवाद आत्मा का अमरत्व, कर्म, पुनर्जन्म, मायावाद, मोक्ष आदि सभी धार्मिक संस्थाओं की समान निधियाँ हैं। भारत की सात पवित्र नदियाँ भारत के सभी निवासियों के लिए पवित्र हैं और लोग एक प्रांत से दूसरे प्रांत में अपने उपासकों के दर्शन के लिए जाते हैं। चारों दिशाओं के चारों धाम–उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में रामेश्वरम, पूर्व में जगन्नाथपुरी तथा पश्चिम में द्वारिका भारत की धार्मिक एकता एवं अखंडता के पुष्ट प्रमाण हैं।

भाषा के स्तर पर भी यहाँ पर्याप्त एकता दिखती है और अधिकांश भारतीय भाषाएँ संस्कृत से प्रभावित हैं। इसी के परिणामस्वरूप सभी भाषाएँ अनेक अर्थों में समान बन गई हैं। आज हिंदी संपूर्ण राष्ट्र की भाषा के रूप में उभरकर आई है।

एकता के विभिन्न रूप– भारत को विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, उत्तर में हिमालय की विशाल पर्वतमाला तथा दक्षिण में समुद्र ने संपूर्ण भारत को एक विशेष प्रकार की ऋतु पद्धति प्रदान की है। सनातन काल से समुद्र एवं हिमालय के बीच एक–दूसरे पर पानी फेंकने का अद्‌भुत खेल चल रहा है। राजनीतिक एकता एवं राष्ट्रीयता की भावना के कारण ही राष्ट्रीय आंदोलनों एवं स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न प्रांतों के लोगों ने एक संगठन एवं झंडे के नीचे कार्य किया। इस एकता का प्रदर्शन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चीनी एवं पाकिस्तानी आक्रमणों के दौरान भी देखने को मिला।

विभिन्न धर्मावलंबियों एवं जातियों के सदस्य होने के पश्चात् भी लोगों की विशिष्ट पहचान भारतीय संस्कृति के अंग के रूप में ही रही है। समूचे देश के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का मौलिक आधार एक–सा है।

उपसंहार– इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारतीय समाज, संस्कृति एवं जन–जीवन में विभिन्नताएँ दिखाई देने पर भी भारत की संस्कृति, धर्म, भाषा, विचार एवं राष्ट्रीयता मूलतः एक हैं। रिचर्ड निक्शन का यह कथन भारत के संदर्भ में भी बिल्कुल सटीक बैठता प्रतीत होता है– ''अपनी एकता के कारण हम शक्तिशाली हैं, परंतु हम अपनी विविधता के कारण और भी अधिक शक्तिशाली हैं।''

(3) मीडिया का वर्चस्व

संकेत बिन्दु : ✲ भूमिका ✲ मीडिया की उपयोगिता ✲ मीडिया के प्रशंसनीय कार्य ✲ उपसंहार

भूमिका– आज मास मीडिया विशेष रूप से सदृश्य मीडिया समाज के बीच जागरूकता का वातावरण बनाने में निर्णायक भूमिका निभा रही है। दृश्य मीडिया के ज्ञान व जानकारी से दर्शकों के मन पर तेजी से और लंबे समय तक प्रभाव पड़ता है। मीडिया के द्वारा सभी घटनाओं से दर्शकों को अवगत करवाया जाता है। मीडिया सूचनाओं को अति तीव्र गति से लोगों को सुलभ कराने में सहायक है। मीडिया सामाजिक चेतना को अधिक जागरूक करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मीडिया की उपयोगिता– भ्रष्टाचार, महँगाई, आतंकवाद, नक्सलवाद, चोरी, डकैती, बलात्कार, बाढ़, सूखा, भूकंप इत्यादि समस्याओं को मीडिया ही जनता के समक्ष लाती है। मीडिया के द्वारा अन्ना का लोकपाल बिल सफल हुआ तथा मीडिया के द्वारा ही 2–जी स्पेक्ट्रम जैसे मामलों में उच्च घरानों के व्यक्तियों के नाम सामने आए। इस प्रकार मीडिया का उद्‌देश्य सामाजिक चेतना को और अधिक जागरुक करना है। 'रवीश कुमार की रिपोर्ट' अनेक पिछड़े क्षेत्रों की जानकारी से हमें अवगत कराती है, तो 'प्रभु चावला' की 'सीधी बात' में विभिन्न प्रसिद्ध व्यक्तियों से समस्या के प्रति प्रश्नों को पूछकर जनता को सत्य से अवगत कराने का प्रयास किया जाता है। मीडिया बाढ़, भूकंपग्रस्त आदि क्षेत्रों पर पहुँचकर वहाँ की जानकारी देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मीडिया के प्रशंसनीय कार्य– मीडिया अंधविश्वास, अंधश्रद्धा को हमारे समक्ष लाती है तथा स्वयं को धर्म का ठेकेदार कहे जाने वाले व्यक्तियों के असली चेहरे को दिखाती है। मीडिया जीवन के प्रत्येक पहलू से लोगों को परिचित करवाती है, चाहे वह धार्मिक हो, सांस्कृतिक हो अथवा कोई भी क्षेत्र हो। मीडिया ने लोगों को उनके अधिकार दिलाने में बहुत अधिक सहायता की है। लोगों को न्याय दिलाने में मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी व्यक्ति के साथ हो रहे अन्याय को समाज के समक्ष लाने में मीडिया ने प्रशंसनीय कार्य किए हैं।

उपसंहार– मीडिया से लोगों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं। कार्टून के माध्यम से समाचार दिखाकर मीडिया जनता का मनोरंजन करने के साथ–साथ ज्ञान में वृद्धि भी करती है। वस्तुतः मीडिया को समाज में जागरूकता उत्पन्न करने के एक साधन के रूप में देखा जा सकता है, जो लोगों को सही व गलत कार्य करने की दिशा में एक प्रेरक का कार्य करती है, इसलिए मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा गया है।

12. अपने पिताजी को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखकर उन्हें अपनी पढ़ाई की प्रगति से अवगत कराइए। 5

उत्तर :

65, हिन्द कॉलोनी,
अजमेर।
दिनांक– 22 अगस्त, 2019
पूज्य पिता जी
सादर चरण स्पर्श।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी पढ़ाई बहुत ही अच्छी तरह से चल रही है। मैं अपनी विद्यालयी परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर इस वर्ष अव्वल रहा हूँ। मेरी इस सफलता में आपके मार्गदर्शन का अहम योगदान है। मैं नित्य 6 से 10 तथा शाम को 6 से 12 बजे पढ़ता हूँ। दोपहर में मैं अपने दोस्तों के साथ पढ़े गए विषय पर चर्चा करता हूँ जिसका मुझे बहुत लाभ मिला है। आगे भी मैं निरंतर यही कार्य जारी रखूँगा और सफल होऊँगा। शेष मिलने पर बातें करूँगा। माताजी को प्रणाम तथा छोटी बहन अंशु एवं प्यारे भाई प्रबीर को प्यार।

आपका पुत्र
मोहित सैनी

अथवा

आपके विद्यालय में खेल–कूद के सामान का अभाव है इसकी ओर ध्यान दिलाते हुए प्रधानाध्यापक को एक आवेदन पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य,
नीरजा मोदी विद्यालय,
जयपुर
विषय– विद्यालय में खेलकूद के सामान का अभाव
महोदय,

मैं आपके विद्यालय में दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं आपके विद्यालय की क्रिकेट टीम का कप्तान भी हूँ। मैंने ऐसा महसूस किया है कि विद्यालय में खेलकूद के सामानों का अत्यंत अभाव है। मेरे क्रिकेट टीम के पास बैट, बॉल तथा विकेट के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। कमोवेश सभी खेलों की यही स्थिति है। अतः आपसे अनुरोध है कि खेलकूद का सामान शीघ्र अतिशीघ्र मँगाने की व्यवस्था करें।

सधन्यवाद
आपका आज्ञाकारी शिष्य
सोहन

13. सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान, सीकर रक्तदान शिविर का आयोजन कर रहा है। आपको संस्था के सदस्य होने के नाते इस आयोजन के प्रचार–प्रसार की जिम्मेदारी दी गई है। लगभग 25–50 शब्दों में रक्तदान करने को प्रेरित करता हुआ एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

रक्तदान शिविर

रक्तदान जीवनदान है।

हमारे द्वारा किया गया रक्तदान कई जिंदगियों को बचाता है।

सेठ लक्ष्मी नारायण स्मृति संस्थान, सीकर द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में पधार कर पुण्य अर्जित करें।

दिनांक– 15.11.2019
समय– रविवार सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक

स्थान :
ओम कॉम्पलेक्स
बैंक ऑफ महाराष्ट्रा के सामने
सेक्टर 6, जयपुर, राजस्थान
संपर्क करें– 9351230000

अथवा

तंबाकू उत्पादों के खतरे के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए एवं इसके खतरों को बताते हुए एक आकर्षक विज्ञापन लगभग 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

तम्बाकू को ना कहें

आज ही छोड़ें और स्वस्थ रहें।

क्या छिपाओगे .....
दाँतों पर पड़े धब्बे?
पीले हो चुके दाँत?
बदरंग जुबान?

तम्बाकू के सेवन से केवल यही नहीं होता। तम्बाकू का सेवन करने से मसूड़ों की बीमारियाँ, मुँह का सूखना, मुँह का कैंसर व मुँह की दुर्गन्ध होना आम बात है।

अपने दन्त चिकित्सक से जानें कि आपको बीड़ी, सिगरेट, खैनी आदि कैसे छोड़नी चाहिए?

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE